विचार बिन्दु

सारा हिन्दुस्तान गुलामी में घिरा हुआ नहीं है। जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा पाई है और जो उसके पाश में फँस गए हैं, वे ही गुलामी में घिरे हुए हैं।

–महात्मा गाँधी

भाईचारा कैसे कायम हो, मेरा सवाल है आपसे

इस मुल्क के हर वाशिंदे को अपने आप से पूछना चाहिये कि वह क्या चाहता है? उसे हर दूसरे इन्सान से भी पूछना चाहिये कि वह क्या चाहता है, बशर्ते कि वह अपने होशो हवास में हो। पहले तो यह सवाल मैं अपने आप से ही पूछ लेता हूँ। मेरा जवाब है, 'अमन चैन'। अब मैं अपने हम वतन लोगों से पूछूँ कि हमारा रिश्ता क्या है? मैं लिख रहा हूँ इसलिये जवाब भी मैं ही दूँगा। हम सभी हिंदुस्तान में रहने वाले हैं इसलिये हिंदुस्तानी हैं। हिंदुस्तान को भारत और इन्डिया भी कहा जाता है, जो हम भारतीय व इन्डियन भी जाने जाते हैं। हमारी पहली जाति हिंदुस्तानी, भारतीय, इन्डियन हुई। नेशनेलिटी के बतौर हर जगह देश-विदेश में हमारी यही पहचान बनती है। उसके बाद खोदा-खोदी करने पर पूछा जायगा कि हम मर्द हैं या औरत। और आगे हमारी उम्र, हमारा तजुर्बा, हमारी काबिलियत पूछे जायेंगे, अगर हम विदेश जाना चाहते हैं। हाँ, धर्म भी बाद में पूछा जा सकता है कि जिसके आधार पर पासपोर्ट व वीज़ा में कोई फर्क नहीं पड़ता। हम इस मुल्क में रहें या मुल्क से बाहर जायें हम सभी एक ही वतन के रहने वाले इन्सान हैं। और आप सब मानेंगे कि हम एक ही मुल्क जिसे हम मातृभूमि, मादरे वतन या मदर लेण्ड कहते हैं उसे माँ, मदर कहने के कारण उसी के बेटे-बेटी हैं और इस लिहाज से सभी भाई-बहन हुए। अब देखिये 'हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब हैं भाई-भाई' का नारा क्या ग़लत है? नहीं, वह सही है, और हमारा खयाल कुछ और है तो वह ग़लत है। क्या हम सभी अपने वतन में अमन-चैन और उसकी बेहबूदी नहीं चाहेंगे? आप चाहेंगे न!

अब मेरा सवाल तथाकथित बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक वर्ग से है। क्या हम दोनों ही वर्ग इस मुल्क में अमन-चैन व बेहबूदी पसंद नहीं करेंगे? क्या हमारे संविधान के अनुसार हम सभी के साथ बिना भेदभाव व पक्षपात के न्याय नहीं होना चाहिये? आजकल मज़हब के नाम पर दोनों ही वर्गों को भेदभाव की शिकायत है। मैं यह नहीं कहता कि एक बात एक वर्ग पर लागू हो और दूसरे पर नहीं। आजकल छोटी-छोटी बातों पर दोनों वर्ग एतराज करते हैं। क्या हम नीचे लिखे मुद्दों पर एकमत नहीं हो सकते?

(1) आप इबादत करिये, हम सेवा-पूजा करें।

(2) न आप शोर करिये न हम करें।

(3) आम रास्तों व सार्वजनिक जगहों पर हमारी इबादत या सेवा-पूजा से कोई रुकावट न हो।

(4) आप हमारे देवी-देवताओं की इज्ज़त करें और हम आपके पीर-पैगम्बर की।

(5) हम सभी मर्द और औरत सर्व शक्तिमान की कृतियाँ हैं। उसने हम सबको बराबर बनाया है बल्कि औरत को ऊँचा दर्जा दिया है चूँकि वह हमारी औलादों को जन्म देती है, परवरिश करती है। उसे केवल बच्चे पैदा करने की मशीन हम सभी कभी न समझें। उसको भी बराबरी के हक हकूक दें।

हम सभी हिंदुस्तान में रहने वाले हैं इसलिये हिंदुस्तानी हैं। हिंदुस्तान को भारत और इन्डिया भी कहा जाता है, जो हम भारतीय व इन्डियन भी जाने जाते हैं। चेतिये, सोचिये, देश बड़ा है कि आपका स्वार्थ, जो इस देश में पैदा नहीं हुए, जो इस देश में पाले-पोसे नहीं गये, जो इस देश में पले-बड़े नहीं हुए, जो इस देश के भूगोल, इतिहास, मौसम, कृषि, सभ्यता-संस्कृति और समस्त जीवनशैली से ही परिचित नहीं, उनसे देश क्या अपेक्षा कर सकता है?

(6) औरतों को भी आज़ादी से जीने का अधिकार है उस पर पर्दा लादना बुज़दिली है।

(7) बहुसंख्यक अपने धर्मशास्त्रों की सीख के अनुसार गाय को पूज्य मानते हैं, इस भावना का अल्पसंख्यक आदर करें।

(8) दोनों ही पक्ष एक-दूसरे के धार्मिक आयोजनों में सहयोग करें, विरोध व पत्थरबाज़ी नहीं।

(9) दोनों ही वर्ग इस मुल्क को अपना समझें और कोई काम ऐसा न करें जो मुल्क के हक में न हो।

(10) अगर किसी मुद्दे पर मतभेद हो तो छोटे-बड़े न्यायालयों में फैसला करवायें, खुद ही शिकायत कर्ता, पेरोकार और न्याय कर्ता न बन जायें।

अब मेरा सवाल विपक्षी नेताओं से है कि क्या वे विपक्ष में होते हुए भी इसी मुल्क के नागरिक नहीं हैं, और यदि हैं तो फिर ऐसा काम न करें जो मुल्क के खिलाफ हो। पहला काम तो ये करिये कि पक्षपात छोड़ दीजिये जो वाजिब है। सही को सही और गलत को गलत कहना सीखिये। अल्पसंख्यक हों या बहुसंख्यक दोनों ही आपके देश के भाई-बहन हैं, केवल हुकूमत पाने के लिये और अपना वोट बैंक बढ़ाने हेतु किसी का पक्ष मत लीजिये। जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय के आधार पर राजनीति करके आप लोग कब तक देश में विभाजक रेखाएँ खेंचते रहेंगे? क्या आप अपने दुष्प्रभावों का परिणाम नहीं देख रहे हैं। क्या भारत का विभाजन दर विभाजन इसी नीति से नहीं हो रहा है? आप लोग ही परिवारवाद और अल्पसंख्यक तुष्टीकरण को सबसे ज़्यादा प्रश्रय दे रहे हैं, क्या यह उचित है? इस देश से विश्व के अन्य देशों में गये भारतीय मूल के लोगों विशेष कर हिंदुओं को प्रताड़ित किया जाय तो उनको आश्रय कहाँ मिल सकता है? केवल भारत में ही ना? बर्मा और बांग्लादेश के रोहिंग्या और अन्य मुस्लिम नागरिकों को अवैध प्रवेश और प्रश्रय देकर क्या हम देश के प्रति गद्दारी नहीं कर रहे हैं? आप जानते हैं आप गलत कर रहे हैं, परंतु सत्ता लोलुपता ने आपको अंधा बना दिया है। देश की समस्याओं को क्यों बढ़ा रहे हैं आप? येन, केन, प्रकारेण आप सत्ता चाहते हैं, केन्द्र व राज्य में काबिज़ रहना चाहते हैं, भले ही देश गुलाम हो जाय, देश में आबादी का व आर्थिक संतुलन बिगड़ जाय। भले ही अंततोगत्वा आपका स्वयं का अस्तित्व ही समाप्त हो जाय। चेतिये, सोचिये, देश बड़ा है कि आपका स्वार्थ, जो इस देश में पैदा नहीं हुए, जो इस देश में पाले-पोसे नहीं गये, जो इस देश में पले-बड़े नहीं हुए, जो इस देश के भूगोल, इतिहास, मौसम, कृषि, सभ्यता-संस्कृति और समस्त जीवनशैली से ही परिचित नहीं, उनसे देश क्या अपेक्षा कर सकता है? परंतु जो इस देश की मिट्टी में पैदा होकर, बड़े होकर इसी मिट्टी को आत्मसात करना चाहते हैं, वे सोचें, आपका इस मिट्टी, इस मातृभूमि के प्रति क्या कर्त्तव्य है? आप सोचेंगे तो सही निर्णय पर पहुँचेंगे।

बुद्धिजीवी एवं पत्रकार, कुछ नेता व अभिनेता, कुछ न्यायिक व प्रशासनिक अधिकारी पता नहीं किसका क्या कर्ज चुका रहे हैं कि देश विरोधी कार्यों व निर्णयों का ही पक्ष लेते हैं? सही और गलत में नीर-क्षीर विवेक का परिचय न देकर सही का विरोध करते हैं, गलत का ही पक्ष लेते हैं, पक्षपात स्पष्ट दिखाई देता है।

आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, परंतु आज सारे विश्व को संकट में डालने वाले आतंकवादी कौन हैं? वे हैं कट्टरपंथी जो एक धर्म विशेष को सारे विश्व में फैलाने का दम भरते हैं। दरअसल ये इस दुनियाँ को सैकड़ों साल पीछे ले जाना चाहते हैं। क्या मध्यपूर्वी एशिया और अफगानिस्तान में जो हुआ वही आप सारी दुनिया में करना चाहते हैं? पहले जिसे वे काफिर कहते हैं उन सभी को मारें और फिर अपने भाई-बहनों को मारें। याद रखिये हम सभी को इसी मुल्क की मिट्टी में ही जीना और मरना है। और जब यहीं जीना-मरना है तो अमन चैन से क्यों न जियें और मरें? ए मेरे वतन के लोगो, मेरो सवालों पर, मेरे सुझावों पर ग़ौर करना और फिर फैसला लेना कि क्या करना है। हर इन्सान चैन से जिये और दूसरों को भी चैन से जीने दे यही ईश्वर चाहता है। धर्म शास्त्र और धर्माचार्य कुछ भी कहें यह हम सभी मानते है कि यह सारी सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई है, उसे नष्ट करने का हमें कोई हक नहीं है। हमारी कोशिश हो कि हम उसे बेहतर बनायें, और यह नहीं कर सकते तो कम से कम उसे बिगाड़ें नहीं, उसे खूबसूरत से बदसूरत न करें। इस मुल्क में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सबका भाईचारा रखना ही होगा।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

झुक आई बदरिया सावन की

प्रेमी रसिकों का महिना सावन है। सावन के समीर के स्पर्श से बिछुडे हुए प्रेमियों के हृदय में विरह की पीडा हरी हो जाती है और उनके मिलन की आकांक्षा प्रबल हो जाती है। ऐसे सुहावने मौसम में अपने सुनहरे पैरों को समेटे और श्वेत पंखों को पसारे कजरारे बादलों को चीर कर उडती हुई बक पंक्ति वर्षा के आनन्द में उन्मत्त प्रेमियों के हृदय में उल्लास पैदा कर देती है।

पाबस ऋतु के शीतल, मंद, सुगंध पवन के वातावरण में जब धरा वधु हरित परिधान पहन अपने प्रियत्तम को रिझाने का प्रयत्न करती है, उस समय श्याम सुन्दर की प्रेयसी गोपिकाओं का मदन जाग उठता है और वह उद्धव के द्वारा अपना संदेश भेजती है –

''मधुकर भली करो तुम आये
इतनी पतियां मोरी दीज्यों, जंहा श्याम घन छाये।
दादुर, मोर पपीहा बोलत, सोवत मदन जगाये॥''

इस प्रकार से यदुवंशी महाराज श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपिकायें विरह से व्याकुल हो गई। उन्होंने स्वंय ही वर्षा का रूप धारण कर लिया –

''निस दिन बरसत नैन हमारे,
सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब तें श्यमा सिधारे।
दृग अंजन लागत नहीं कबहूं, कर कपोल भये कारें।
कंचुकी पट सूकत नहीं सजनी, उर बिच बहत पिनारे॥''

गिरधर गोपाल की दीवानी मीरां को वर्षा ऋतु के आगमन से कुछ संतोष मिलता है। वर्षा की बूंदों की आहट में उसे मदन मोहन के पदचाप की भनक सुनाई देती है –

''झुक आई बदरिया सावन की,
सावन की मन भावन की।
नन्हीं नन्ही बूंदन मेहा, शीतल पवन सुहावन की।
ऐसे में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
'मीरां' के प्रभु गिरधर नागर, आनंद मंगल गावन की॥''

महाकवि घनानंद भी जीवनदायी मेघों से निवेदन करते है कि वह उनके आसुंओ को लेजाकर उस स्थान पर बरसायें, जहां उनकी

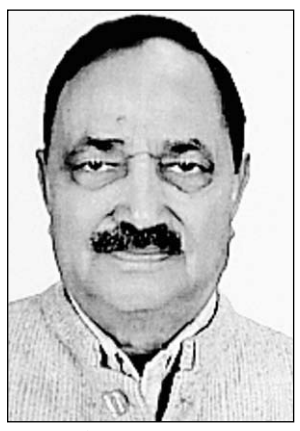

देवीसिंह नरूका

प्रिया (सुजान) निवास करती है। शायद इन्हें देखकर उसे उनकी याद आजायेगी-

''घन आनंद जीवन दायक हो, कछु मेरियो पीर हिये हरसो।
कबहूं वा विलासी 'सुजान' के आंगन मो अंसुवान की ले बरसो॥''

कविवर सेनापति की नामिका के प्राण तो उसके प्रियतम में ही है। वर्षाकाल में वह उनके बिना डर के मारे विष खाकर मर जाना ही। उचित समझती है-

'सेनापति' प्राणपति, सांची हो कहत एक,
पाई के तिहारे पांई, प्रानन को पाइहों।
इकली डरी हो धनु देखके डरी हों
खाई विष की डरी हो घनश्याम मरीजे हों॥''

उत्तर प्रदेश के एक लोकगीत में कल्पना की उडान का रसास्वादन कीजिये। बिजली गोरी है और बादल काले हैं। यह ऐसा लगता है जैसे श्याम वर्ण, के पुरूष के गोरी स्त्री हो। बादल से रंग लेकर कन्हैया का जन्म हुआ और बिजली ने अपना रंग राधिका को दिया है–

''गोरी गोरी बिजुरी बदरवा बा करिया,
करिया मरदवा के गोर की महरिया।
बदरा से रंग मांगि जन्मे कन्हैया,
देहले बा राधिका के रंगवा बिजुरिया॥''

घनघोर बादल गर्जन कर रहे हैं, ऐसे में विरहणी की वेदना ओर भी बढ़ जाती है। राजस्थानी रमणी कहती है कि बिजली तो निर्ल्लज है, वह तो कहना नहीं मानेगी किन्तु हे मेघ! तूं तो कुछ लज्जा कर और धीरे-धीरे गर्जन कर–

''बीजलियां निल्लजियां, जलधर तूं ही लज्ज।
सूनी सेज विदेश पिय, मधुरई मधुरई गज्ज॥''

सावन माह में स्वछन्दता पूर्वक हंसने, गाने, खेलने, झूलने तथा सहेलियो के साथ हंसी-ठिठोली करने के लिए राजस्थानी बाला को पीहर की याद आती है और कामना करती है कि इस समय पीहर में होती तो कितना अच्छा होता –

''लाग्यो लाग्यो मां सावणिये रो मास,
तीज तिवांरा मां बावड़ी जे,
ओर सहेल्यां मां पीहरये न जावे,
हूं तो तरसूं मां सासरे जे॥''

इसी प्रकार से हरियाणा की युवती भी झूला झूलते हुए मार्ग की ओर देखती है कि शायद उसका छोटा भाई उसे पीहर ले जाने के लिए आ रहा है–

''झूले चढ़कर देखण लागी, छोटा बीरा आवे सै।''

देवीसिंह नरूका,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

ऐसा मंदिर जहां सीए रखते हैं भक्ति का हिसाब

- **पांच करोड़ जाप का रिकॉर्ड, एक-एक का लेखा-जोखा कौन कितना टाइम देता है**
- **यह जाप केवल सावन के महीने में ही होता है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। राजस्थान का एक ऐसा मंदिर, जहां आने वाले हर भक्त के भक्ति का हिसाब रखा जाता है। यहां तक कौन-कितना टाइम देता है और कितनी माला जपता है इसका भी लेखा-जोखा इस मंदिर में हर समय आपको मिल जाएगा। बताया जाता है कि यहां अब तक सबसे ज्यादा 5 करोड़ बार जाप हो चुका है। दरअसल, यह मंदिर है श्रीगंगानगर शहर के अग्रसेन चौक में हैं। जो रामेश्वरम सेवा समिति शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है।

यहां श्रद्धालु सावन में शिव के पंचाक्षरी मंत्र ओम नम: शिवाय का जाप करते हैं। खास बात यह है कि यह हिसाब मंदिर के प्रवक्ता पवन मित्तल रखते हैं, जो पेशे से सीए है। मंदिर समिति अध्यक्ष उमाशंकर मित्तल ने बताया कि मंदिर की स्थापना 20 साल पहले हुई थी। समिति के पदाधिकारी सादुलशहर के एक शिव मंदिर में गए थे। वहां ओम नम: शिवाय जाप होते देखा तो रामेश्वरम मंदिर में भी इसकी शुरुआत करने की सोची। इसके बाद वर्ष 2007 में मंदिर में एक लक्ष्य लेकर ओम नम:शिवाय जाप किया गया। अध्यक्ष ने बताया कि इससे पहले आयोध्या राम मंदिर निर्माण के लिए सिया राम जय जय सियाराम सियाराम जयराम जय जय राम के करोड़ों जांप करवाने का लक्ष्य दिया था। तभी मंदिर में सिद्धी के लिए ओम नम: शिवाय के करोड़ों जाप का लक्ष्य रखा। पहली बार मंदिर समिति की ओर से 21 लाख जाप पूरे करने का लक्ष्य रखा गया था लेकिन पहली ही बार में यह 27 लाख तक पहुंच गया। इसके बाद संख्या करोड़ों तक पहुंच गई। मंदिर में सावन के महीने में 5 करोड़ से ज्यादा का जाप हुआ। जाप किए मंत्रों का ब्यौरा यहां के पुजारी को बताना पड़ता है। पुजारी इन मंत्रों का हिसाब किताब बनाकर मंदिर के प्रवक्ता को भेजता है। मंदिर प्रवक्ता पेशे से सीए होने के कारण वे अंतिम तौर पर इसे जांचते हैं और सबसे ज्यादा जाप करने वाले पंद्रह श्रद्धालुओं को सम्मानित किया जाता है। वे बताते हैं कि भक्ति के हिसाब-किताब के लिए रजिस्टर मेंटेन किया गया है। इसमें हर श्रद्धालु का हिसाब किताब उसके नाम के हिसाब से रखे जाते हैं। यह जाप केवल सावन के महीने में ही होता है। श्रद्धालु मंदिर में आकर माला फेरते हैं। एक माला के बाद एक कमल गट्टा अपने पास रखी कटोरी में डाल देते हैं। इस तरह जब वह जाप करके उठता है तो जितने कमल गट्टे उसकी कटोरी में होते हैं वह उतनी ही मालाएं मंदिर के पुजारी को दर्ज करवाता है। मंदिर समिति प्रवक्ता सीए मित्तल बताते हैं कि चूंकि वे इकोनॉमिक्स से जुड़े हैं ऐसे में मंत्रों का भी बखूबी हिसाब रखते हैं। माला में मनके 108 होते हैं लेकिन वे सौ मनकों की माला के हिसाब से ही हिसाब लगाते हैं।

विश्व सांप दिवस आज

- **सापों के लिए दयालु बनें, दुश्मन नहीं मित्र हैं इंसान के**
- **विश्व भर में सांपों की 3500 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं**

झुंझुनूं, (कासं)। सांप को देखते ही अक्सर हम में से अधिकांश लोग सांप को देखते ही कांप उठते हैं। लेकिन वास्तव में हमें इनसे भयभीत नहीं होना चाहिए, क्योंकि सांप इंसान के दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त हैं। लेकिन हमारे अवचेतन मन में बैठे डर की वजह से हम सांपों को देखते ही होश खो बैठते हैं और उन पर हमला कर देते हैं। यह भी देखने को मिला है कि साधारणतया सांप इंसान को नहीं काटते हैं, जब तक कि उन पर हमला नहीं हो या उनमें सुरक्षा का भाव नहीं आए।

एक सच यह भी है किस सांप भी हमसे उतना ही डरते हैं, जितना हम सांपों से। विश्व भर में सांपों की 3500 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं।

इनमें से कुछेक ही जहरीली होती हैं। भारत में भी पाए जाने वाले सांपों में से केवल 4 प्रजाति कोबरा करैत, रसेल वाइपर, सॉव स्केल्ड और वाइपर ही जहरीले हैं। लेकिन सांप इंसान के लिए बेहद उपयोगी, जैव चक्र के लिए भी बेहद जरूरी हैं। दरअसल ये सांप खेतों में फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़े-मकोड़ों और चूहों को खा जाते हैं।

जिससे न केवल खाद्य शृंखला सुचारू संचालित होती है, बल्कि इंसान को फसल उत्पादन में फायदा होता है। इसी वजह से कई स्थानीय बोलियों में सांप को क्षेत्रापाल भी कहा जाता है। सांपों का महत्व समझाने के उद्देश्य से ही 1967 में अमेरिका के टेक्सस में सर्वप्रथम सांप दिवस मनाया गया था।

इसके बाद से प्रतिवर्ष सांप दिवस मनाया जाता रहा है। तो इस सांप दिवस को हम भी शपथ लें कि सांपों को बेवजह परेशान नहीं करेंगे और उन्हें मारने की बजाय किसी विशेषज्ञ से पकड़वाकर जंगल में छुड़वाएंगे। झुंझुनूं जिले में भी सांप को पकड़ने के विशेषज्ञ बीएल सैनी है। जिनसे आपके घर में सांप निकलने पर वन विभाग के माध्यम से संपर्क किया जा सकता है।

बरोडिया के सरकारी स्कूल का भवन हुआ जर्जर, छत गिरने का खतरा

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर उपखण्ड क्षेत्र के बरोडिया गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का वर्षों पूराना भवन जर्जर अवस्था में पहुंच चूका है। जिसके कक्षा-कक्षों की छत टूटकर नीचे गिरने लग गई है। वहां पर शुक्रवार को ग्रामीणों ने कक्षाओं का संचालन बंद करवा दिया और भवन की मरम्मत करने और नये कमरे बनाने की मांग रखी।

इस पर शिक्षा विभाग, राजस्व विभाग के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे तो वहीं वल्लभनगर पूर्व विधायक रणधीर सिंह भीण्डर भी मौके पर पहुंच करके स्कूल भवन का निरीक्षण किया।

वर्षों पूराने भवन में कभी भी गिर सकती हैं छत : बरोडिया स्कूल का भवन वर्षों पूराना होने की वजह से जर्जर अवस्था में पहुंच चूका है। इस कारण भवन की छत क्षतिग्रस्त होकर टूटनी शुरू हो गई। स्कूल में पढने वाले बच्चों ने अपने अभिभावकों को जब भवन की दूर्दशा के बारे में बताया तो शुक्रवार को सभी ग्रामीण एकत्रित होकर स्कूल पहुंच गये। यहां पर उन्होंने जर्जर भवन में कक्षाओं के संचालन को बंद करवा दिया।

बरोडिया गांव के सीनियर स्कूल की जर्जर छत।

वहीं आन्दोलन करते हुए नये भवन की मांग करने लगे। इस पर स्कूल

- **ग्रामीणों ने स्कूल संचालन बंद करवा भवन की मरम्मत की मांग रखी**

स्टॉफ ने शिक्षा विभाग को सूचित किया। जिस पर भीण्डर सीबीईओ कार्यालय से सीबीईओ महेन्द्र जैन, सहायक सीबीईओ भेरूलाल सालवी मौके पर पहुंचे। इसके साथ ही उपतहसीलदार भीण्डर भंवरसिंह झाला भी मौके पर पहुंच करके जर्जर भवन की स्थिति देखी और ग्रामीणों से बातचीत की।

इस दौरान उपतहसीलदार भंवरसिंह झाला को ग्रामीण महिलाएं दूसरे विद्यालय के परिसर तक पैदल लेकर गई और बताया कि यहां कैसे कीचड में से होकर बच्चे स्कूल आते है। इस दौरान अधिकारियों ने कहा कि भवन के मरम्मत के लिए प्रस्ताव बनाकर भेज रखा है।

पूर्व विधायक भीण्डर भी पहुंचे स्कूल : सोशल मीडिया पर जब स्कूल के जर्जर भवन के वीडियो देखे तो वल्लभनगर पूर्व विधायक रणधीरसिंह भीण्डर तुरन्त बरोडिया गांव पहुंचे। यहां पर उन्होंने भवन का निरीक्षण किया और ग्रामीणों से जानकारी ली। इस दौरान शिक्षा विभाग के उपस्थित अधिकारियों ने बताया कि भवन की मरम्मत करने के लिए प्रस्ताव बनाकर भेज रखा है। लेकिन स्वीकृति नहीं मिलने के कारण कार्य अटका हुआ है। इस पर पूर्व विधायक भीण्डर ने कहा कि प्रस्ताव के बारे में जिला कलेक्टर से मिलकर जल्द स्वीकृति दिलाने का प्रयास करूंगा। इसके अलावा ग्रामीणों ने नये भवन की भी मांग रखी तो भीण्डर ने कहा कि नये भवन व कमरों को भी प्रस्ताव बनाकर भिजवा देते हैं, जिससे स्वीकृति मिलने पर उनका भी निर्माण हो जायेगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 16 जुलाई, 2022

सावन मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र सांय 5:31 तक, आयुष्मान योग रात्रि 8:49 तक, विष्टि करण दिन 1:28 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा दिन 1:28 तक है। आज सावन संक्रांति, सूर्य कर्क में प्रवेश रात्रि 10:57 पर करेगा। पूण्य काल 10:57 से है। बुध कर्क राशि में रात्रि 12:10 पर होगा। आज चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:54 पर होगा। आज जया पार्वती व्रत पारणा, पंचक है और मनसा पूजा बंगाल में आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:28 से 9:10 तक, चर 12:23 से 2:14 तक, लाभ-अमृत 2:14 से 5:37 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:19

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा।

मिथुन

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला

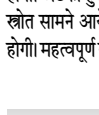

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। नवीन कार्य योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक

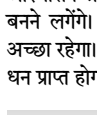

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु

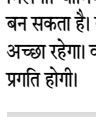

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

मकर

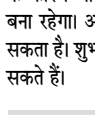

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

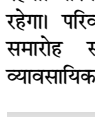

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मीन

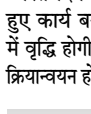

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में भय और असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।